तेरापंथ विकास परिषद एवं अमृत सांसद का 16वां संयुक्त वार्षिक अधिवेशन संपन्न

समीक्षा में निर्भिकता, निष्पक्षता और तटस्थता हो : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर, 30 अगस्त, 2010।

'आदमी को बोलने के लिए पहले परीक्षा करनी चाहिए, परीक्षित किया हुआ वचन ही महत्त्वपूर्ण होता है, कोई व्यक्ति हजार बात कह देता है किंतु वह बात अर्थ शून्य होतो है, एक व्यक्ति ऐसा होता है जो एक ही बात कहता है वह उपशांत करने वाली होती है, बात को ज्यादा लंबा दोहराना, बात में सारपूर्णता न होना वाणी का दोष माना जाता है।'

उक्त विचार तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने तेरापंथ विकास परिषद के 16वें संयुक्त वार्षिक अधिवेशन के समापन पर उपस्थित संभागियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्यश्री महाश्रमण ने आगे कहा कि मुनष्य के पास बुद्धि होती है अमृत सांसद के मेंम्बर है निश्चित ही बुद्धिमान है ही जहां बहस होती है वहां बुद्धि काम करती है, बुद्धि का होना भी विशेष बात है, उन्होंने कहा कि अमृत सांसद यहां एकत्रित होना और यह समीक्षा का स्थान है समीक्षा भी निर्भिकतापूर्ण, निष्पक्षता, तटस्थता होनी चाहिए। जहां समीक्षा बुद्धिमता के साथ बाहर आती है उसमें प्राणवत्ता आती है, कोई भी व्यक्ति न्यायविद् है तो उसे किसकी समीक्षा कर रहे हैं उसका भी अध्ययन कर लेना चाहिए, समोक्षा में प्रतिरोध की भावना न हो, समीक्षा ज्ञानपूर्वक हो, राग-द्वेष मुक्त समीक्षा हो इस तरह की समीक्षा से विकास का रास्ता प्राप्त होता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि तेरापंथ विकास परिषद गुरुदेव आचार्य तुलसी के समय से निरंतर कार्य कर रही है विकास परिषद एक मंच है जिसके द्वारा सेवा, समाज के बारे में विचार किया जाता है, आयोजन कोई बड़ी बात नहीं है किंतु इसके द्वारा ठोस कार्य हो और कार्य किसी निमित से आगे बढ़ता रहे।

उन्होंने यह भी कहा परिषद के संयाजक लालचन्द सिंघी के दो वर्ष पूर्ण हुए हैं और वे आगे भी कार्य करते रहें अपनी चिंतन शक्ति का उपयोग आगे भी करते रहें।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कठिन श्रम करना चाहिए, तेरापंथ धर्मसंघ के सदस्यों को सीधी आचार्यों से सीख मिलती है, अनुशासन के साथ सब लोगां को मिलजुलकर कार्य करें। यह सम्मेलन निष्पतिरूप में उत्साह के साथ संपन्न हुआ है, सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना है, समाज में नेतृत्व सक्षम हो और अंगुली निर्देश की मनोवृति भी होनी चाहिए। धर्मसंघ में सबका नेतृत्व है, समाज में सक्षम नेतृत्व उभरे, अमृत सांसद जो यहां आए वे यह सोचकर जाएं कि अपने-अपने क्षेत्र में कार्य करना है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने आचार्यश्री महाश्रमण के अमृत महोत्सव के संदर्भ में चर्चा करत हुए बताया कि आचार्यश्री महाश्रमण के जीवन के पचावें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जाएगा जो चार चरणों में आयोजित होगा जिसका प्रथम चरण कांकरोली में 12 मई, 2010 को होगा दूसरा चरण 9 सितम्बर, 2011 केलवा में, तीसरा चरण 29 जनवरी, 2012 आमेट में और चौथा चरण 30 अप्रैल, 2012 को बालोतरा में आयोजित होगा जिसका आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा करेगी। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने बताया कि उक्त आयोजन आडम्बर मुक्त होगा मूल लक्ष्य पंचाचार, की आराधना है जिसमें सभी साधु-साध्वियां श्रमण श्रेणी द्वारा उत्तराध्ययन का अर्थ सहित वाचन। सप्ताह में एक बार श्रुत सामायिक का प्रयोग के अलावा दर्शनाचार, चारित्राचार, तप आराधना आदि मुख्य है।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने अपने संबोधन में सांसदों को बड़ा लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक लालचन्द सिंघी न आगामी लक्ष्यों को ध्यान में रखकर उस पर क्रियान्वति करने की चर्चा की।

इस अवसर तेरापंथ विकास परिषद के महामंत्री डालमचन्द बैद, तेरापंथ विकास परिषद के परामर्शक कन्हैयालाल छाजेड़, बन्नेचन्द मालू, मांगीलाल सेठिया, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष एन. गौतमचन्द डागा, पूर्वअध्यक्ष मर्यादाकुमार कोठारी आदि विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे।

चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक लालचन्द सिंघी, महामंत्री डालमचन्द बैद का मोमेन्टो द्वारा स्वागत किया।

चातुर्मास व्यवस्था समिति के कोषाध्यक्ष राजकरन सिरोहिया ने समिति की ओर आयोजन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का संचालन परिषद् के महामंत्री डालमचन्द बैद ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण ने की यात्रा की घोषणा

आचार्यश्री महाश्रमण सरदारशहर चतुर्मास संपन्न कर राजलदेसर मर्यादा महोत्सव से पूर्व बीकानेर संभाग की यात्रा करेंगे जो इस प्रकार है - 29 से 30 नवम्बर, 2010 को श्रीडूंगरगढ, 8 से 10 दिसम्बर 2010 बीकानेर, VV-13 दिसम्बर, 2010 को गंगाशहर में प्रवास करेंगे।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)